साहित्यिक संवाद

प्रो. के. वनजा अभिनंदन ग्रन्थ

प्रधान संपादक : एन. मोहनन

संपादक : सजी आर. कुरुप

सह संपादक : श्यामकुमार एस.

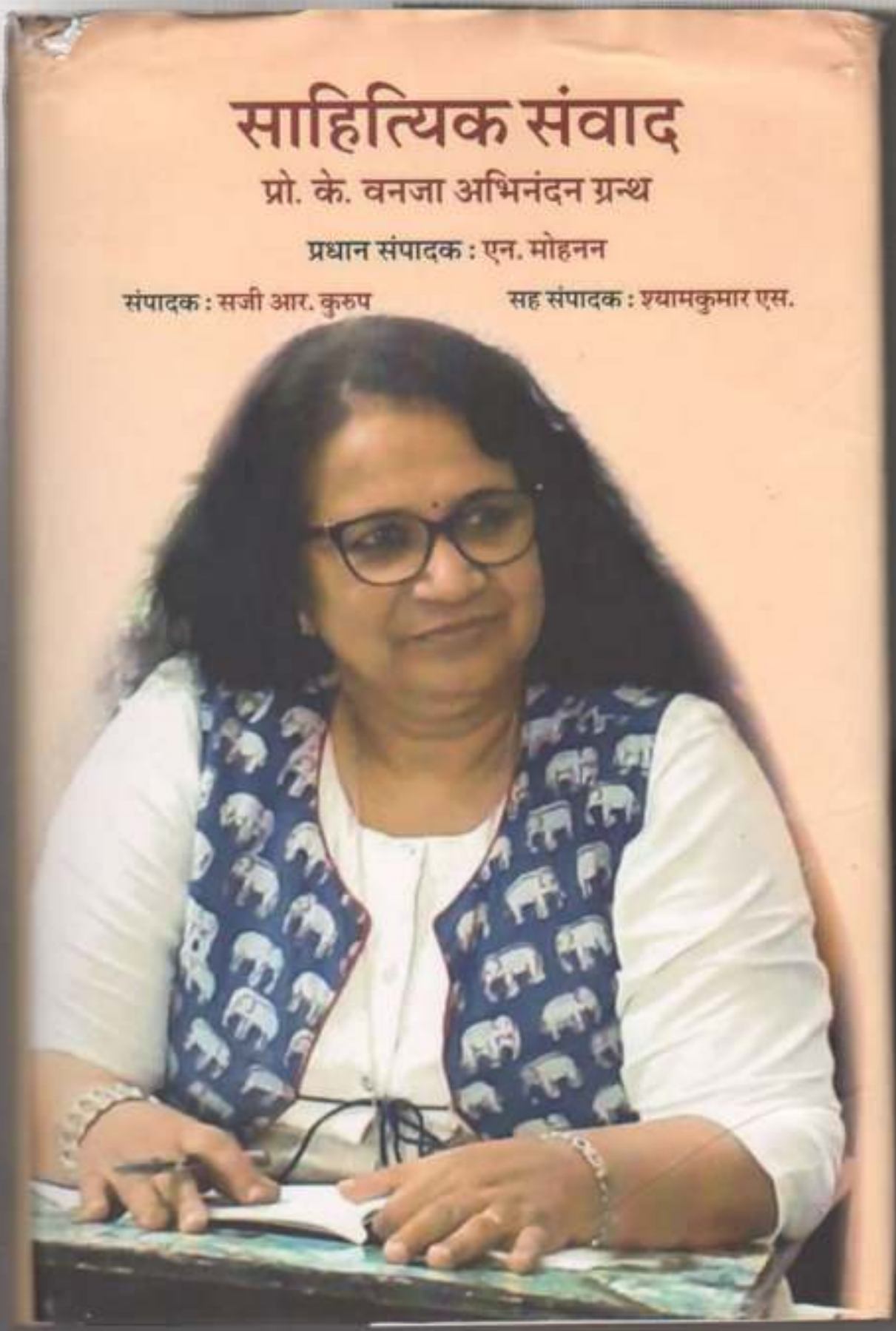

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों, अथवा सम्पादक/सम्पादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© प्रधान संपादक

प्रथम संस्करण : 2021

ISBN 978-93-89341-70-6

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anugyabooks@gmail.com • salesanugyabooks@gmail.com

फोन : 011-22825424, 09350809192

www : anugyabooks.com

मूल्य : 1900 रुपये

आवरण

मीना-किशन सिंह

मुद्रक

सौरभ प्रिन्टर्स प्रा. लि.

SAHITYIK SAMVAD

*A Festschrift in Honour of **Prof. K. Vanaja** edited by **Prof. N. Mohanan, Prof. Saji R. Kurup & Prof. Shyamkumar S.***

प्रधान सम्पादकीय

डॉ. के वनजा की अवकाश प्राप्ति के अवसर को ध्यान में रखते हुए उनके छात्र डॉ. सजी आर कुरुप और डॉ. श्यामकुमार और मैंने मिलकर सोचा कि इस अवसर पर उनका समुचित सम्मान करने के लिए क्या क्या करना है। बहुत सारे अध्यापक हर साल में अवकाश प्राप्त करके विस्मृति में डूब जाते हैं। यह साधारण प्रक्रिया मात्र है। पर डॉ. वनजा को उसी प्रकार छोड़ने के लिए हम तैयार नहीं थे।

धन्यता की बात है कि उनकी अपनी कई पुस्तकें साहित्यिक जगत् में अमरता प्रदान करते हुए अब निकल चुकी हैं। लेकिन उन्होंने हमसे जो प्रेम दिखाया है, उसके लिए एक उचित पुरस्कार अनिवार्य समझा गया, जो चिरंजीव भी हो। हम तीनों ही नहीं, उनके छात्र, उनके मित्र और उनको भली भाँति जाननेवाले सज्जन भी। लेकिन शुरुआत हम तीनों ने मिलकर की। सोचा कि अप्रैल 30 को उनका रिटायरमेंट है, उसके बाद मई 9 को एक कार्यक्रम चलाएंगे एरणाकुलम के किसी अच्छे होटल के सभागार में। इसके लिए वाट्स आप ग्रुप बनाया, उनके साथ जितने छात्रों ने पी एच डी ली है, उन सब को मिलाकर, बाहर से सिर्फ मैं इस कार्यक्रम के उपदेशक के रूप में। इसके अलावा मेरे साथ जितने छात्रों ने पीएच डी ली है, उनमें से चुने गये कुछ नामों को भी जोड़ने का निर्णय लिया गया। ग्रुप में मेसेज गया, सबने बड़े हर्ष एवं उल्लास के साथ स्वीकार किया। ये सब फरवरी महीने में हुए। मार्च तक आते आते लॉक डाउन की उद्घोषणा हुई। हमने तय किया यह कार्यक्रम मई में चलाना मुश्किल है। लॉक-डाउन के बाद ही होगा। उसका और लम्बा होने की सम्भावनाएँ भी है। पर ग्रुप सक्रिय रहा। लगभग सभी लोग मेसेज करते रहे।

एक दिन रात का समय लगभग सात आठ बज गया होगा, डॉ. सजी का एक मेसेज आया कि हम उस आदरणीय गुरुनाथा के सम्मानार्थ एक अभिनन्दन ग्रन्थ क्यों न निकालें। यह उनके लिए सारस्वत पूजा ही रहेगी। सजी ने यह भी सूचित किया 4 अप्रैल के अन्दर सबको लेख डी.टी.पी. करके ई.मेल में भेजना है। इस मेसेज ने मेरे मन को भड़काया ही नहीं मुझे डकराया भी। मुझे लगा कि मेरा भी दायित्व है इस योजना को आगे बढ़ाना और एक बिलकुल उचित सम्मान ग्रन्थ को रूपायित करना। मैंने ग्रुप में मेसेज दिया मेरी तरफ से दो लेख सुनिश्चित हैं। फिर मैंने सोचा कि मेरे और वनजा के मित्रगण जो केरल के बाहर हैं, लगभग समान हैं। उनका भी उपयोग इस अवसर पर करना संगत ही होगा। इस कार्यक्रम की गरिमा ही नहीं वनजा के प्रति समर्पित सम्मान की गरिमा भी शिखर तक पहुँच जायेगी।

मैंने एक मेसेज तैयार करके बाहर के मित्रों को भेज दिया। यह मार्च महीने के मध्य में था। फिर धीरे-धीरे मैंने सबसे फोन पर बात भी की। लेकिन फोन करने के पहले ही लगभग सभी मित्रों ने मेरे वाट्सआप में प्रतिक्रिया जता दी और कहा कि "जरूर लेख भेजूँगा, खुशी की बात है, वनजा जी का उचित सम्मान होना ही चाहिए।" ये सब हिन्दी के प्रतिष्ठित आलोचक, कवि, तथा रचनाकार हैं। मुझे आश्चर्य हुआ कि एक मेसेज मात्र से इन सबने तुरन्त अपनी सहमति

पनामा का इकोफेमिनिज्म —अनामिका 126

स्त्री सर्जनात्मकता : ऐतिहासिक सन्दर्भ —नमिता सिंह 128

भारतीय रंगमंच पर रवीन्द्रनाथ के नाटकों का प्रभाव —उषा गांगुली 145

साहित्य का देश-काल —अजय तिवारी 150

विद्यानिवास मिश्र के निबन्धः पुनर्नवता के सृजन सन्दर्भ —चित्तरंजन मिश्र 174

विश्व हिन्दी सम्मेलनों में अन्तर्निहित व्यापक दृष्टि —कैलाशचन्द्र पन्त 181

समकालीन हिन्दी महिला कथा लेखन : विविध सन्दर्भ —सुधाकर सिंह 184

महात्मा गाँधी और भक्ति काव्य —योगेश्वर सिंह 190

सौन्दर्य उद्योग की प्रयोगशाला —औरतें —क्षमा शर्मा 197

साहित्यिक पत्रकारिता में स्त्री : कल, आज और कल —कमल कुमार 200

अतीत के चलचित्र : स्मृति की रेखाओं में सिमटी जिन्दगी की
बदरंग तस्वीर उर्फ समाज से कैफियत माँगते कुछ सवाल —रोहिणी अग्रवाल 203

भूमण्डलीकरण के दौर में हिन्दी भाषा और अनुवाद —राम बक्ष 214

यक्ष रक्ष नाग देव-हेल द्वीप, सिंहली: एक अट्ठकथा —रंजना अरगड़े 219

'जीवन एक उत्सव है': महाश्वेता देवी —गरिमा श्रीवास्तव 235

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के छद्म नाम :
संशय और समाधान —बी. सत्यनारायणा 239

हिन्दी कथा-साहित्य में किन्नर स्वर —एम वेंकटेश्वर 246

'रस', 'अलंकार' का सामर्थ्य और प्रभाव —दयाशंकर त्रिपाठी 256

छठ पर्व के लोकगीत : वस्तु के आयाम —रवि रंजन 265

ललित निबन्धकार: आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी —रवी अनु 269

मानव संघर्ष की उत्तम विजय-गाथा: "राम की शक्ति पूजा" —ऐ. एन. चन्द्रशेखर रेड्डी 291

अनामिका की कविता : स्त्री-विमर्श के बहाने —आलोक गुप्त 298

समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य में भारतीयता: "वैश्वानर"
का सन्दर्भ —बैजनाथ प्रसाद 308

हिन्दी आलोचना का समकालीन विमर्श और प्रसाद —शिवनारायण 313

"हादसे और आपहुदरी" —इन्दु वीरेन्द्रा 320

बंजारा लोक गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन —प्रतिभा मुदलियार 326

पितृसत्तात्मकता और प्रारम्भिक स्त्री कथा लेखन —अल्पना मिश्र 333

मुहमद कवि जो प्रेम का —विवेक निराला 340

कालजयी है कवयित्री ललद्यद —अग्निशेखर 349

रामचन्द्र शुक्ल के कबीर सम्बन्धी मूल्यांकन का पुनर्पाठ —करुणाशंकर उपाध्याय 363

समकालीन हिन्दी कविता के बहाने आदिवासी साहित्य
से साक्षात्कार —मुन्ना तिवारी 370

स्वप्न भी एक शुरुआत है —राजीव रंजन गिरि 378

प्रणय भावना की सफल अभिव्यक्तिः सात गीत वर्ष —एस.वी.एस.एस.
नारायण राजू 387

स्त्री-मुक्ति की संघर्ष-गाथा: कन्नड नाटक "मूके मंकळे" —सुनीता मंजनबैल 340

जन आन्दोलन बनाम दलित अस्मिता यथा दलित साहित्य —रामदेव 393

चन्द्रकान्त देवताले की कविताई समय की 'आग' में सिझा
सभ्यता का 'पत्थर' —प्रभाकर सिंह 399

भारतीय मातृभाषा शिक्षण और आदिवासी भाषाओं के संरक्षण
और विकास की सम्भावनाएँ —विश्वासी एक्का 403

'मानस' में वर्णित प्रकृतिः नदियों के सन्दर्भ में... —संजय एल. मादार 408

नैतिक-मूल्यों का महाधिकारपत्र 'तिरुक्कुरल' में स्वच्छ
जीवन का दिग्दर्शन —सी. जय शंकर बाबु 413

मलयाळम सिनेमा में स्त्री संचेतना एक विहंगावलोकन —अनीता नायर 425

भारत की अक्षुण्ण सांस्कृतिक विरासत रामकथा: कला सन्दर्भ —योगेन्द्र प्रताप सिंह 432

ग्राम स्वराज और नारी सशक्तिकरण का सन्दर्भ —बी. जगन्नाथ रेड्डी 440

समकालीन हिन्दी नाटकों में मानवाधिकार का प्रश्न और गाँधी —आभा गुप्ता ठाकुर 443

वर्तमान सन्दर्भों में आचार्य शिवपूजन सहाय की अर्थवत्ता —अनुशब्द 449

आख्यायिका, प्रतिरोध एवं भक्ति : सोयराबाई का हिन्दुस्तानी
काव्य —मोविन जाहोरोद्दीन 454

हिन्दी साहित्य में आदिवासी कविता लेखन —राज कुमार मीणा 470

मुक्त-पुरुष निराला —वी.वी. विश्वम 479

दलित कविता का सौन्दर्यशास्त्र —वी.के. अब्दुलजलील 485

उत्तराधुनिक हिन्दी आलोचना —एन मोहनन 491

हिन्दी नाटकों के विकास में केरल का योगदान —पी. जे. शिवकुमार 496

"युगपुरुष श्री नारायण गुरु": इतिहास बोध से सम्पृक्त जीवनी —एम.एस. विनयचन्द्रन 499

समकालीन कविता में पारिस्थितिक समस्याएँ —प्रमोद कोवप्रत 503

आलोचना की अनुपस्थिति —जयचन्द्रन आर. 511

रेहन पर रग्घू– मध्यवर्गीय जीवन की व्यथा– गाथा —एस आर जयश्री 515

प्रवासी साहित्य की अवधारणा एवं स्त्री लेखन —बीना ईप्पन 520

लालसाओं के चक्रवात में फँसे प्रवासी ...कौन देस को वासी —सुमा एस 524

नवजागरण काल की अन्य पत्रिकाएँ जब हिन्दी प्रदेश के इन विवादों में उलझी थीं कि हिन्दी उर्दू के निकट होनी चाहिए या संस्कृत के या अपनी लोक भाषाओं के, महादेवी की पीढ़ी जो तब पाठशाला में ही होगी, नयी तरह की सर्वसमावेशी हिन्दी का सपना चुपचाप देख चुकी थी–ऐसा आभास मुझे महादेवी द्वारा सम्पादित "चाँद" और उसकी समकालीन अन्य स्त्री पत्रिकाओं के पन्ने पलटते हुए हुआ! उनमें हिन्दीतर प्रदेशों की विदुषी महिलाओं के अनेक लेख हैं और उनकी हिन्दी का मराठी, तमिल, पंजाबी या बंगाली फ्लेवर उसी सम्मान के साथ बरकरार रखा गया है!

प्रोफ़ेसर वनजा उसके बाद की तीसरी पीढ़ी की ऐसी विदुषी हैं जो ऐसी धाराप्रवाह हिन्दी लिखती– बोलती हैं कि कोई जल्दी पकड़ नहीं पाए कि यह उनकी मातृभाषा नहीं! और उससे भी बड़ी बात कि मलयालम और हिन्दी साहित्य में समानांतर भाव से फूले-फले आन्दोलनों के तुलनात्मक अध्ययन के लिए जैसी पैनी और विराट दृष्टि चाहिए, वह इनके पास है!

– अनामिका

अनुज्ञा बुक्स
दिल्ली-110032

978-93-89341-70-6
9 789389 341706
₹ 1900.00